Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LI (51), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

छत्तीसगढ़ राज्य के जनजातियों में वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम के प्रभाव का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

आशिष कुमार* डॉ. एल.एस. गजपाल**

*** शोधार्थी, समाजशास्त्र अध्ययन शाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.) भारत**
**** प्राध्यापक, समाजशास्त्र अध्ययन शाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.) भारत**

शोध सारांश – छत्तीसगढ़ राज्य, जो भारत के मध्य में स्थित है, अपनी समृद्ध आदिवासी संस्कृति और विविध जनजातीय संरचना के लिए प्रसिद्ध है। राज्य में गोंड, उरांव, भतरा, कमार, बैगा, पहाड़ी कोरवा, भुंजिया, पंडो, अबूझमाड़िया आदि प्रमुख जनजातियाँ निवास करती हैं, जो मुख्यत: वन एवं ग्रामीण क्षेत्रों में रहती हैं। 2011 की जनगणना के अनुसार, राज्य की कुल जनसंख्या का लगभग 30.62 प्रतिशत भाग अनुसूचित जनजातियों से संबंधित है। इन समुदायों में गरीबी, अशिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी और वित्तीय संसाधनों तक सीमित पहुँच जैसी समस्याएँ विद्यमान हैं, जिसके कारण वे आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए हैं। इस परिप्रेक्ष्य में वित्तीय साक्षरता का अभाव उनके आर्थिक और सामाजिक विकास में प्रमुख बाधा बनता है।इस शोध का मुख्य उद्देश्य छत्तीसगढ़ राज्य के गरियाबंद जिले में निवास करने वाली जनजातियों के बीच वित्तीय साक्षरता कार्यक्रमों के प्रभाव का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना है। अध्ययन में यह समझने का प्रयास किया गया है कि ये कार्यक्रम किस हद तक जनजातीय समुदाय के आर्थिक व्यवहार, बचत प्रवृत्ति, ऋण प्रबंधन, निवेश और सामाजिक सशक्तिकरण पर प्रभाव डाल रहे हैं।अध्ययन के लिए प्राथमिक और द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों का उपयोग किया गया है। उत्तरदाताओं का चयन दैवनिर्देशन (लॉटरी) विधि से किया गया है। डेटा संग्रह प्रश्नावली, साक्षात्कार एवं पर्यवेक्षण विधियों के माध्यम से किया गया।अध्ययन से ज्ञात हुआ कि वित्तीय साक्षरता कार्यक्रमों ने जनजातीय समुदायों में बैंकिंग सेवाओं के उपयोग, बचत खातों की संख्या, और ऋण सुविधाओं की पहुँच में उल्लेखनीय वृद्धि की है। लगभग 50% उत्तरदाता अब बैंकिंग सेवाओं से परिचित हैं, जबकि 46% लोग औपचारिक ऋण सुविधाओं का लाभ उठा रहे हैं। इसके साथ ही स्वयं सहायता समूहों (SHG) के माध्यम से महिलाओं का सशक्तिकरण एवं सामुदायिक एकता में भी वृद्धि हुई है। तथापि, सांस्कृतिक रूढ़िवाद, भाषा अवरोध और सूचना की कमी जैसी चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई हैं। अध्ययन निष्कर्ष रूप में दर्शाता है कि वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम जनजातीय समाज में आर्थिक जागरूकता और सामाजिक परिवर्तन के सशक्त साधन के रूप में उभर रहे हैं।

शब्द कुंजी – जनजातियों समाज, सामाजिक–संस्कृति, आर्थिक, वित्तीय साक्षरता, वित्तीय सुरक्षा, वित्तीय व्यवहार।

प्रस्तावना – छत्तीसगढ़ जनजाति बाहुल्य राज्य है जिसमें विभिन्न प्रकार की जनजातियां निवास करती है। छत्तीसगढ़ के बस्तर एवंसंभाग को जनजातियों का भूमि के नाम से जाना जाता है। छत्तीसगढ़ के जनजाति को भारतीय संविधान के अनुच्छेद–342 में अनुसूचित जनजातियों का प्रावधान दिया गया है। राज्य में 43 प्रकार के जनजाति पाई जाती है जो 161 और समूह में विभाजित जनसंख्या है। छत्तीसगढ़ राज्य के कुलजनसंख्या का 30.62 प्रतिशत जनजाति निवास करती है। छत्तीसगढ़ में कुल–7 विशेष पिछड़ी जनजाति समूह है जिसमें 5 जनजाति केन्द्र सरकार की जनजाति समूह अबुझमाडिया, बैग, बिरहोर, कमार और पहाड़ी कोरवा है। राज्य सरकार के द्वारा 2 जनजाति समूह पण्डो, भूजिया को विशेष पिछड़ी जनजाति समूह का दर्जा दिया गया है। वित्तीय साक्षरता का अर्थ – धन का उचित प्रबंध करना है। जिसमें किसी व्यक्ति के तर्क बुद्धि ,ज्ञान, कौशल के माध्यम से अपने आय और व्यय, बचन, निवेश, और ऋण का सही प्रबंध को शामिल किया गया है। वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम, जो धन प्रबंधन, बचत, निवेश, ऋण प्रक्रिया और डिजिटल बैंकिंग की समझ प्रदान करते हैं, इन समुदायों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने और सामाजिक परिवर्तन लाने का एक महत्वपूर्ण साधन हैं। वित्तीय साक्षरता की आवश्यकता वर्तमान समय में जनजाति समाज द्वारा प्राप्त आय को बचत एवं प्रबंध करने का ज्ञान नहीं है।और डिजिटल बैंकिंग जैसे विषयों की समझ। भारत सरकार द्वारा प्रधानमंत्री जन धन योजना, आत्मनिर्भर भारत अभियान और राज्य स्तरीय पहलों जैसे छत्तीसगढ़ ग्रामीण बैंक की योजनाओं के माध्यम से जनजातीय क्षेत्रों में ऐसे कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। ये कार्यक्रम न केवल आर्थिक स्वावलंबन को बढ़ावा देते हैं, बल्कि सामाजिक संरचना में बदलाव लाते हैं, जैसे महिलाओं की भागीदारी बढ़ना और पारंपरिक अर्थव्यवस्था से आधुनिक संक्रमण। तथापि, जनजातीय समुदायों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, भाषाई बाधाएं और भौगोलिक दुर्गमता इन कार्यक्रमों की प्रभावशीलता को प्रभावित करती हैं। समाजशास्त्रीय दृष्टि से यह अध्ययन इन कारकों का परीक्षण करेगा कि कैसे वित्तीय साक्षरता सामाजिक गतिशीलता, लिंग समानता और सामुदायिक एकता को प्रभावित करती है। यही कारण जनजाति समाज में प्राप्त आय और खर्च के बीच बचत का लेखा–जोखा करना और आय का सही प्रबंधन नहीं है। जनजाति समूह गैर व्यय ज्यादा कर देते हैं। इस अध्ययन से जनजाति समाज को वित्तीय साक्षरता के माध्यम से कब, कहां कैसे आय

को बचत करना है वर्तमान परिदृश्य में उपभोक्ता संचालित इस समाज में अधिक व्यय और आवेगपूर्ण खरीदारी के चक्र में फंसना आसान है। वित्तीय साक्षरता शिक्षित व्यक्तियों, नागरिकों, छात्रों को जिम्मेदारी से खर्च करने की आदत विकसित करने औरजरूरत और इच्छाओं के बीज अंतर समझने में मदद करती है। यह आवश्यक खर्चों और विवेकधीन खर्चों के मध्य अंतर करना सीख कर व्यक्तियों को एक विवेकपूर्ण विकल्प का चयन करता है।

साहित्य का पुनरावलोकन

परमेश्वर राव (2013) का अध्ययन आन्ध्र प्रदेश में ग्रामीण परिवार के बीज वित्तीय समावेश की स्थिति का अध्ययन किया है अध्ययन का उद्देश्य यह है कि आंन्ध्र प्रदेश के लिए वित्तीय समावेशन सूचकांक का अध्ययन करना एवं मंडल ब्लाक स्तर पर घरेलू स्तर पर वित्तीय समावेशन के सूचकांक का अनुमान लगाना वित्तीय समावेश के लिए सरकारी पहलू नीतिगत मुद्दों और चुनौतियां व्यावसायिक रणनीतियां ऋण वितरण चौनलों का अध्ययन करना इन्होंने आरबीआई सूचकांक शोध अध्ययन पद्धति का उपयोग किया है। अध्ययन में आन्ध्र प्रदेश के तीन जिलों के 6 मंडलों के 12 गांव को शामिल किया गया है जिसमें 780 परिवार का मल्टी स्तरी नमूनकरण तकनीक विधि के द्वारा साक्षात्कार अनुसूची उपकरण के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया है। शोध का सुझाव वित्तीय सेवाओं को प्रबंध होना चाहिए जिससे धन और बीमा सुविधा हो सके। बैंकिंग सेवा गांव-गांव में तेजी से आ सके, वित्तीय समावेश को बढ़ावा देने के लिए बैंकिंग प्रणाली को सरकार द्वारा प्रोत्साहन करना चाहिए। अपने अध्ययन में इस प्रकार सुझाव दिया है।

के बेंद्रे, अनुभा (2017) ने छत्तीसगढ़ के चयनित जिलों में लोगों की सेवानिवृत्ति योजना निर्णय लेने पर वित्तीय साक्षरता का अध्ययन किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य यह दर्शाता है कि छत्तीसगढ़ के लोगों के लिए ठडथ्स् उज्ज्वल बहु कार्यात्मक ल्यूमिनेयर आधारित वित्तीय साक्षरता स्तर की गणना और विश्लेषण करना एवं छत्तीसगढ़ के लोगों के बीज वित्तीय साक्षरता फैलाने में बैंकों सरकारी संगठन गैर सरकारी संगठनों संस्थाओं का कथित संक्षेप प्रभाव का जांच करना। शोध में स्तरीकृत या2च्छिक नमूना पद्धति का प्रयोग किया गया है। छत्तीसगढ़ के 1422 लोगों पर वित्तीय साक्षरता का अध्ययन किया गया है। आंकड़ों का संकलन ऑनलाइन एवं ऑफलाइन के माध्यम से संकलन किया गया है। शोध का निष्कर्ष उत्तरदाताओं द्वारा अधिकांश रूप से नगद मोड पर वित्तीय लेनदेन पर रुचि रखते हैं। उत्तरदाता द्वारा मोबाइल, नेट बैंकिंग, पेटीएम, का उपयोग कम किया जाता है। अधिकांश लोग एल आई सी कराया है शोध का सुझाव सामाजिक उत्थान सहकारी संगठन गैर सरकारी संगठन को वित्तीय शिक्षा प्रदान करना चाहिए, बैंक और वित्तीय एजेंसियों को ग्रामीण शहरी क्षेत्र में वित्तीय साक्षरता को बढ़ावा देना चाहिए। शैक्षणिक संस्थानों में वित्तीय साक्षरता का कार्यक्रम चलाना चाहिए।

बालसुंदरी पी (2018) ने नीलगिरी जिले में जनजातीय परिवार का वित्तीय समावेशन और साक्षरता का अध्ययन किया है। अध्ययन का उद्देश्य यह दर्शाता है, कि अध्ययन क्षेत्र में जनजाति परिवारों के बीच वित्तीय साक्षरता और समावेशन के स्तर और वित्तीय सेवाओं का लाभ उठाने से जुड़े समस्याओं का पता लगाना एवम् आदिवासी परिवारों के लिए वित्तीय संस्थाओं द्वारा आयोजित वित्तीय साक्षरता करना एवं इन्होंने सर्वेक्षण एवं वर्णनात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया है तथा अपने अध्ययन में तमिलनाडु के निलगिरी जिले के चार विकासखंड के 10-10 गांवों के कुल 40 गांव का चयन जिसमे 582 परिवार के व्यक्तियों का साक्षात्कार अनुसूचियां का प्रयोग कर प्रश्नावली में बंद एवं खुली प्रश्नावली का उपकरण के माध्यम से तथ्यों का संकलित किया है स अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है की जनजातियों में वित्तीय संस्थानों की बंद मानसिकता गरीब लोगों और अन्य बहिष्कृत लोगों द्वारा प्रोत्साहन तथा वित्तीय निर्माण समावेशन नीति तैयार करना गरीब महिलाओं को सशक्त बनाने और सरकारों को अपने लोगों के प्रति सेवा सुचारु रूप से पहचाना सीखना चाहिए उन्होंने अपने अध्ययन में यह सुझाव दिया है, की जनजाति के स्व सहायता समूह को वित्तीय प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए सार्वजनिक निजी बैंक को अपनी वित्तीय सेवा केंद्र जनजाति क्षेत्र में विस्तार करना चाहिए सहकारी बैंकों को उनके पुनर्वासन किया जाना और वित्तीय साक्षरता पर विशेष ध्यान देना चाहिए, कम दर पर ऋण देना चाहिए, ऑनलाइन बैंकिंग सेवा का धीरे-धीरे विकास करना चाहिए।

छेत्री, प्रमेश. (2019) ने दार्जिलिंग जिले में वित्तीय साक्षरता पहला और प्रभाव पर अध्ययन किया है स अध्ययन का उद्देश्य यह है, कि दार्जिलिंग जिले के वित्तीय साक्षरता के स्तर को मापना वित्तीय साक्षरता पहलों की जांच करना और भविष्य की दिशाएं सुलझाना दार्जिलिंग जिले पहाड़ी इन्होंने नमूना कारण विश्लेषणात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया है इन्होने अपने अध्ययन में दार्जिलिंग जिले के पांच नगरपालिकाओं और 12 ब्लॉकों के 530 परिवारों के उत्तरदाताओं का यादृच्छिकृत नमूनाकारण तकनीक प्रश्नावली उपकरणों के माध्यम से तथ्यों का संकलन किया अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है, कि वित्तीय साक्षरता देश के आर्थिक उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है स वैश्वीकरण के युग में वित्तीय ज्ञान न केवल सुविधा बन गया है स बल्कि सूचित उपभोक्ता विकल्प के लिए एक आवश्यक उपकरण बन गया है, और सलाह के प्रावधान से परे हैं इन्होंने अपने अध्ययन में यह सुझाव दिया है, कि इस डिजिटल युग में भारत नेटवर्क कनेक्टिविटी के मामले में पीछे रहा है, दार्जिलिंग के बहुत से जिले अभी तक इंटरनेट नहीं पहुंचा है वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम में लोगों के वित्तीय साक्षरता कक्षाओं में भाग लेने के लिए संभावना नहीं है, इन सभी को देखते हुए स्कूल पाठ्यक्रम में वित्तीय साक्षरता संभावना नहीं है।

मंजू (2021) ने छत्तीसगढ़ राज्य के ग्रामीण क्षेत्र में वित्तीय साक्षरता के स्तर का अध्ययन किया है। अध्ययन का उद्देश्य यह दर्शाता है कि छत्तीसगढ़ राज्य के ग्रामीण क्षेत्र में वित्तीय साक्षरता के स्तर का पता लगाना एवं ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले लोगों की सामाजिक जनसंख्या और उनकी वित्तीय समृद्धि के स्तर के बीच संबंध का पता लगाना है। शोध पद्धति में खोजपूर्ण और वर्णनात्मक डिजाइन का प्रयोग किया गया है। शोध का अध्ययन क्षेत्र राज्य के दो जिले के दो ब्लॉक में से 50-50 उत्तरदाताओ को चयन किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य %

1. अध्ययन गत जनजातियों की सामाजिक-संस्कृति स्थिति का अध्ययन करना।
2. अध्ययन गत जनजातियों की आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।
3. वित्तीय साक्षरता के प्रति जनजातियों को जागरूकता की स्थिति को अध्ययन करना।

प्रस्तुत शोध की अध्ययन पद्धतिया

अध्ययन पद्धति – शोध की प्रविधि अनुसंधान के लिए बहुत महत्वपूर्ण कड़ी होती है बिना इसके शोध कार्य नहीं किया जा सकता अनुसंधान के तथ्यों के स्रोत के आधार पर सही तथ्यों को सामने लाया जा सकता है सामाजिक अनुसंधान सामाजिक घटनाओं तथा सामाजिक समस्याओं से संबंधित है सामाजिक अनुसंधान की प्रकृति वैज्ञानिक होने के कारण हम अपने उद्देश्य सरलता से प्राप्त कर सकते हैं ज्ञान की प्राप्ति तभी संभव है जबकि योजना बंद तरीके से अनुसंधान कार्य का समापन संपादन किया जाए।

प्रस्तुत अध्ययन हेतु अध्ययन पद्धति को तीन भागों में बांटा गया है%

1. अध्ययन क्षेत्र का परिचय
2. उत्तरदाताओं का चुनाव
3. तथ्यों का प्रस्तुतीकरण

1 शोध क्षेत्र का परिचय – गरियाबंद जिला, छत्तीसगढ़ राज्य का एक नवगठित जिला है, जिसका गठन 1 जनवरी 2012 को रायपुर जिले से अलग करके किया गया था। इसका मुख्यालय गरियाबंद शहर में है। यह जिला 5,822.861 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला है और प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध है। इसके पड़ोसी जिले धमतरी, महासमुंद, और ओडिशा के नबरंगपुर, कालाहांडी, और नुआपाड़ा जिले हैं। जिले की उत्तरी सीमा महानदी नदी से मिलती है, जो राजिम के पास पैरी नदी के साथ संगम बनाती है। पैरी और सोढूर नदियां उत्तर की ओर बहती हैं और राजिम में त्रिवेणी संगम बनाती हैं, जिसे छत्तीसगढ़ का 'प्रयागराज' कहा जाता है, जहां प्रतिवर्ष माघ पूर्णिमा से महाशिवरात्रि तक राजिम कुम्भ मेला आयोजित होता है। जिले का 50.41% क्षेत्र वनों से आच्छादित है, जिसमें उदंती-सितानदी टाइगर रिजर्व और 2,935 वर्ग किलोमीटर का गरियाबंद वन शामिल है, जो साल और सागौन जैसे संसाधनों से समृद्ध है। जिले में सात तहसीलें-गरियाबंद, छुरा, मैनपुर, देवभोग, राजिम, अमलीपदर, और फिंगेश्वरऔर छह शहरी निकाय (एक नगर पालिका% गरियाबंदय पांच नगर पंचायत% राजिम, छुरा, फिंगेश्वर, देवभोग, कोपरा) हैं। 2011 की जनगणना के अनुसार, जिले की जनसंख्या 5,97,653 है, जिसमें 6.77% शहरी क्षेत्रों में रहते हैं, लिंगानुपात 1020 है, और साक्षरता दर 68.26% है। जनजातीय आबादी (36.14%) और अनुसूचित जातियां (17.97%) जिले की सामाजिक संरचना का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। राजिम का राजीव लोचन मंदिर, 7वीं शताब्दी के नाला वंश के राजा विलासतुंग से संबंधित, ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व का है। छुरा ब्लॉक के जटमई और घटारानी झरने पर्यटकों के लिए आकर्षण हैं। फिंगेश्वर ब्लॉक आधुनिक कृषि का केंद्र है। गरियाबंद का इतिहास ब्रिटिश काल में महासमुंद तहसील के अंतर्गत बिंद्रानवागढ़ तहसील के रूप में शुरू हुआ, जिसे बाद में प्रशासनिक सुविधा के लिए उप-तहसीलों में विभाजित किया गया। यह जिला अपनी प्राकृतिकसुंदरता,सांस्कृतिक धरोहर और जनजातीय जीवनशैली के लिए जाना जाता है

2. उत्तरदाताओं का चुनाव– अध्ययन हेतु भारत सरकार विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग आईआईटी भिलाई तथा पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर द्वारा शासकीय फणीकेश्वरनाथ महाविद्यालय फिंगेश्वर में आयोजित कार्यशाला के 50 प्रतिभागियों के 50% का अर्थात 25 प्रतिभागियों का चयन दैवनिर्देशन की लॉटरी विधि से उत्तरदाताओं के रूप में किया गया हैप्रस्तुत अध्ययन हेतु तथ्यों का संकलन संचित साक्षात्कार अनुसूची उपकरण तथा अवलोकन प्रविधि के अध्ययन से किया गया है।

3. तथ्यों का प्रस्तुतीकरण– उत्तरदाताओं के प्रस्तुतीकरण हेतु तालिका विधि एवं अन्य सांख्यिकीय वीडियो का प्रयोग किया गया है तालिकाओं का विश्लेषण आवृत्ति प्रतिशत तथा दंड एवं रेखाचित्र की अध्ययन से किया गया है।

शोध सामग्री एवं विधि– इस शोध का क्षेत्र छत्तीसगढ़ राज्य का गरियाबंद जिला चुना गया है, जो जनजातीय बहुल क्षेत्र है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य जनजातीय समुदाय की सामाजिक-सांस्कृतिक एवं आर्थिक स्थिति का मूल्यांकन करना तथा उन्हें वित्तीय साक्षरता के प्रति जागरूक करना है। उत्तरदाताओं का चयन दैवनिर्देशन की लॉटरी विधि द्वारा किया गया है, जिससे निष्पक्षता सुनिश्चित हो सके। डेटा संकलन के लिए मुख्य रूप से प्राथमिक आंकड़ों का उपयोग किया गया है, जिसमें प्रत्यक्ष साक्षात्कार, प्रश्नावली एवं समूह चर्चा जैसी विधियाँ सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त, आवश्यकता अनुसार द्वितीयक आंकड़ों का भी प्रयोग किया गया है, जो विभिन्न सरकारी रिपोर्टों, जनगणना आंकड़ों एवं पूर्व प्रकाशित शोधों से प्राप्त किए प्रस्तुत शोध अध्ययन में जनजातियों में वित्तीय साक्षरता महत्वपूर्ण कौशल है। उत्तरदाताओं की आयु 15 से 25 वर्ष तक है जिसमें 20 महिला एवं 5 पुरुष को लिया गया है। और 11 अनुसूचित जनजातीय 2 अनुसूचित जाति तथा 12 अन्य पिछड़ा वर्ग से लिया गया है। चयनित उत्तरदाताओं की सामाजिक सांस्कृतिक, आर्थिक एवं वित्तीय साक्षरता की जागरूकता का अध्ययन किया गया है। अधिकतर उत्तरदाताओं को टीवी, मोबाइल, न्यूज पेपर आदि विज्ञापन के माध्यम से वित्तीय साक्षरता का जानकारी प्राप्त होती है। सभी उत्तरदाताओं के पास बैंक खाता एवं मोबाइल फोन का उपयोग करते हैं और उत्तरदाताओं ने ऑनलाइन के माध्यम से खरीदी बहुत ही कम करते हैं।

शोध में प्राप्त आंकड़ों का विवरण

सारणी क्र. 1 : में उत्तरदाताओं की शिक्षा का विवरण

क्र.	उत्तरदाताओं की शिक्षा की स्थिति	आवृत्ति	प्रतिशत
1	स्नातक	06	24
2	स्नातकोत्तर	19	76
	कुल योग	25	100

स्त्रोत- प्राथमिक आंकड़ों पर आधारित

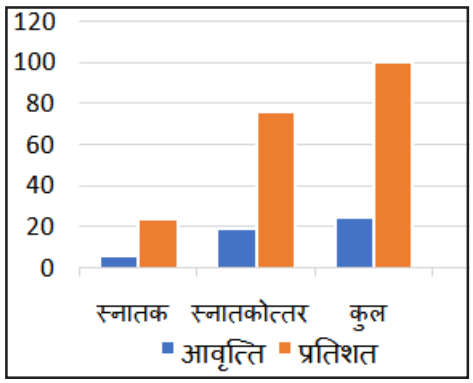

उपरोक्त सारणी में उत्तरदाताओं की शिक्षा की स्थिति का विवरण को स्पष्ट किया गया है। जिसमें कुल 25 उत्तरदाओं में से 24 प्रतिशत (06) उत्तरदाता स्नातक की है और 76 प्रतिशत उत्तरदाता (19) उत्तरदाता स्नातकोत्तर की शिक्षा प्राप्त की है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में शिक्षा का स्तर अच्छी है।

सारणी क्र. 2 : उत्तरदाताओं की व्यवसाय का विवरण

क्र.	उत्तरदाताओं की व्यवसाय की स्थिति	आवृत्ति	प्रतिशत
1	कृषि	07	68
2	मजदूरी	05	20
3	शासकीय नौकरी	01	04
4	स्वयं का व्यवसाय	02	08
	कुल योग	25	100

स्त्रोत- प्राथमिक आंकड़ों पर आधारित

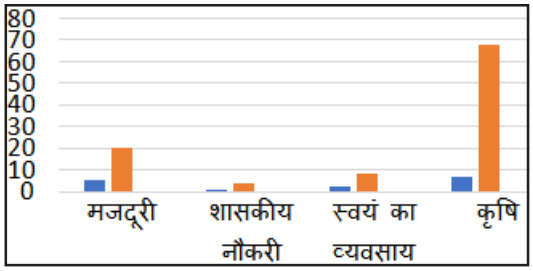

उपरोक्त सारणी में उत्तरदाताओं की व्यवसाय की स्थिति का विवरण को स्पष्ट किया गया है। जिसमें कुल 25 उत्तरदाता में से 68 प्रतिशत (17) उत्तरदाता कृषि का कार्य करते हैं 20 प्रतिशत उत्तरदाता (05) उत्तरदाता मजदूरी का कार्य करते हैं 04 प्रतिशत (01) उत्तरदाता शासकीय सेवा में कार्यरत हैं तथा 08 प्रतिशत (02) उत्तरदाता स्वयं का व्यवसाय कर रहे हैं। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि सबसे अधिक 68 प्रतिशत (17) उत्तरदाता कृषि कार्य करते हैं और सबसे कम शासकीय सेवा में 04 प्रतिशत (01) उत्तरदाता है।

सारणी क्र. 3 : में उत्तरदाताओं की मासिक आय का विवरण

क्र.	उत्तरदाताओं की मासिक आय की स्थिति	आवृत्ति	प्रतिशत
1	2000-4000	08	32
2	4000-6000	04	16
3	6000-8000	02	08
4	8000-10000	04	16
5	10000-12000	02	08
6	12000-14000	02	08
7	14000-16000	03	12
	कुल योग	25	100

स्त्रोत- प्राथमिक आंकड़ों पर आधारित

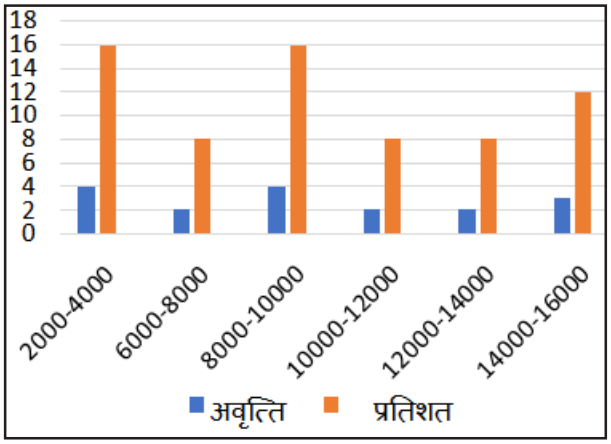

उपरोक्त आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि उत्तरदाताओं की मासिक आय में विविधता है। सर्वाधिक 32% उत्तरदाता रू2000-रू4000 की आय श्रेणी में आते हैं, जो दर्शाता है कि यह आय वर्ग सर्वाधिक सामान्य है। इसके बाद रू4000-रू6000 और क्रू8000-रू 10000 आय वर्ग में प्रत्येक 16% उत्तरदाता हैं। रू6000-रू8000, रू10000-रू12000, और रू12000-रू 14000 की श्रेणियों में प्रत्येक 8% उत्तरदाता हैं, जबकि रू14000-रू 16000 आय वर्ग में 12% उत्तरदाता शामिल हैं। कुल मिलाकर, 25 उत्तरदाताओं के उत्तरों के आधार पर यह आंकड़े प्रस्तुत किए।

सारणी क्र. 4 : उत्तरदाताओं की बैंक खाता एवं ऑनलाइन भुगतान जानकारी का विवरण

क्र.	उत्तरदाताओं की शिक्षा की स्थिति	आवृत्ति	प्रतिशत
1	बैंक खाता से ऑनलाइन भुगतान	08	32
2	परिवार के सदस्यों के पास बैंक खाता	17	68
	कुल योग	25	100

स्त्रोत- प्राथमिक आंकड़ों पर आधारित

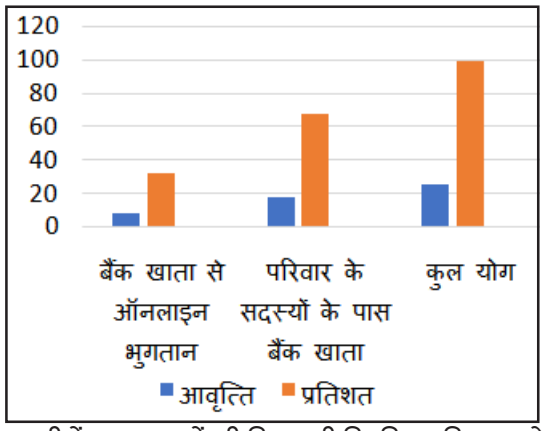

उपरोक्त सारणी में उत्तरदाताओं की शिक्षा की स्थिति का विवरण को स्पष्ट किया गया है। जिसमें कुल 25 उत्तरदाओं में से 100 प्रतिशत (25) उत्तरदाता बैंक खाता से ऑनलाइन भुगतान करते हैं तथा 100 प्रतिशत उत्तरदाता (25) उत्तरदाता परिवार के सदस्यों के पास बैंक खाता उपलब्ध है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में बैंक खाता एवं ऑनलाइन भुगतान जानकारी 100 प्रतिशत मिल चुका है।

क्र.	स्थिति	स्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
1	कार्यक्रम जानकारी का स्रोत	1 पंचायत	4	16
		2 मित्र	6	24
		3 जिला कार्यालय	2	08
		4 मीडिया	13	52
2	मोबाइल उपकरण की जानकारी होना	1 हाँ	25	100
		2 नहीं	00	00
3	मोबाइल का प्रकार	1 कीपेड	01	04
		2 स्मार्ट फोन	24	96
4	मोबाइल रखने का उद्देश्य	1 केवल कॉल करने के लिए	05	20
		2 इंटरनेट का उपयोग करने के लिए	02	08

		3 रेडियो के उपयोग हेतु	01	04		
		4 सभी के लिए	17	68		
5	बैंक से सम्बंधित जानकारी मोबाइल पर	1 फोन पर बैंक सम्बंधित जानकारी	13	52		
		2 परिवार के सदस्य के पास बैंक खाता	12	48		
6	बैंक खाता रखने का उद्देश्य	1 वेतन पाने के लिए	02	08		
		2 धन को सुरक्षित रखने के लिए	08	23		
		3 सरकार के तहत लाभ प्राप्त	06	24		
		4 ऋण प्रयोजन के लिए	02	08		
		5 सभी के लिए	07	28		
7	नकद निकासी/ जमा के जिए	1 व्यक्तिगत रूप से	02	08		
		2 एटीएम उपयोग	02	08		
		3 दोनों	21	84		
8	पैसे लेन-देन के लिए कौन से तकनीक का उपयोग	1 भीम एप	02	08		
		2 पेटीएम एप	04	16		
		3 फोन पे	11	44		
		4 गूगल पे	04	16		
		5 कुछ नही	04	12		
			हाँ / प्रतिशत		नहीं / प्रतिशत	
9	ऑनलाइन के माध्यम से पेमेंट करना	1 किराना समान	15	60	10	40
		2 मोबाइल रिचार्ज	12	48	13	52
		3 बस रेल टिकट	01	04	24	96
		4 मेडिकल स्टोर	07	28	18	72
		5 स्टेसनरी क्रय	04	16	21	84
		6 पान दुकान गुटखा खरीदी	00	00	25	100
		7 डेली निड्स समान	03	12	22	88
		8 सब्जी खरीदी	06	24	19	76
		9 कपड़े खरीदी	10	40	15	60
		10 गाड़ी मे पेट्रोल /डीजल	05	20	20	80
		11 बस किराया/ सिनेमा टिकट	03	12	22	88
		12 रिस्तेदारो को पैसे भेजने	12	48	13	52
		13 अन्य खरीदी	14	56	11	44

उपरोक्त आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि अधिकांश उत्तरदाता आधुनिक डिजिटल साधनों से अच्छी तरह परिचित हैं। मोबाइल फोन का उपयोग 100% लोगों द्वारा किया जा रहा है, जिनमें से 96% स्मार्टफोन उपयोगकर्ता हैं। सूचना का प्रमुख स्रोत मीडिया (52%) है, और लोग बैंक संबंधी कार्यों के लिए भी मोबाइल का सक्रिय रूप से उपयोग कर रहे हैं। डिजिटल पेमेंट के लिए फोन पे, पेटीएम और गूगल पे जैसी सेवाएँ लोकप्रिय हैं, हालांकि कुछ लोग अभी भी इन तकनीकों का उपयोग नहीं करते। ऑनलाइन भुगतान का उपयोग किराना, कपड़े और अन्य आवश्यक वस्तुओं की खरीद में बढ़ता दिख रहा है, परंतु बस-रेल टिकट, पान दुकान या पेट्रोल जैसी सेवाओं में इसका उपयोग अपेक्षाकृत कम है। कुल मिलाकर, यह डेटा ग्रामीण या स्थानीय समुदाय में डिजिटल साक्षरता और मोबाइल-आधारित वित्तीय लेन-देन की बढ़ती स्वीकृति को दर्शाता है।

निष्कर्ष – अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि छत्तीसगढ़ राज्य के गरियाबंद जिले में चलाए जा रहे वित्तीय साक्षरता कार्यक्रमों ने जनजातीय समुदायों के आर्थिक और सामाजिक जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। पारंपरिक रूप से आर्थिक रूप से पिछड़े माने जाने वाले इन समुदायों में अब वित्तीय जागरूकता धीरे-धीरे बढ़ रही है। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि वित्तीय साक्षरता कार्यक्रमों के माध्यम से लगभग 50 प्रतिशत उत्तरदाता अब बैंकिंग सेवाओं से परिचित हैं, जबकि 46 प्रतिशत लोग औपचारिक ऋण सुविधाओं का लाभ उठा रहे हैं। इससे यह संकेत मिलता है कि इन कार्यक्रमों ने जनजातीय समुदायों में वित्तीय संस्थानों के प्रति विश्वास बढ़ाया है। इसके अतिरिक्त, स्वयं सहायता समूहों (SHG) के माध्यम से महिलाओं में आर्थिक आत्मनिर्भरता और निर्णय लेने की क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जिससे सामाजिक सशक्तिकरण और सामुदायिक एकता को भी बल मिला है।हालांकि, अध्ययन यह भी दर्शाता है कि वित्तीय साक्षरता के क्षेत्र में अभी कई चुनौतियाँ बनी हुई हैं। भाषा की विविधता, सांस्कृतिक परंपराएँ, रूढ़िवादी दृष्टिकोण और सूचना तक सीमित पहुँच इन कार्यक्रमों के प्रभाव को पूरी तरह से साकार होने से रोकती हैं। कई जनजातीय परिवारों में अभी भी औपचारिक बैंकिंग तंत्र के प्रति झिझक और अविश्वास देखा जाता है। इसके बावजूद, यह तथ्य महत्वपूर्ण है कि वित्तीय साक्षरता पहलें जनजातीय समाज को आर्थिक रूप से सशक्त करने, गरीबी घटाने और सामाजिक परिवर्तन की दिशा में अग्रसर करने का कार्य कर रही हैं। अत% कहा जा सकता है कि यदि इन कार्यक्रमों को स्थानीय भाषाओं और सांस्कृतिक संदर्भों के अनुरूप अधिक प्रभावी ढंग से लागू किया जाए, तो ये छत्तीसगढ़ के जनजातीय समाज के समग्र विकास के लिए एक स्थायी और सशक्त साधन बन सकते हैं।

सुझाव– अध्ययन के आधार पर छत्तीसगढ़ के जनजातीय समुदायों में वित्तीय साक्षरता को और अधिक प्रभावी बनाने हेतु निम्नलिखितसुझाव प्रस्तुत किए जा सकते हैं

1. वित्तीय साक्षरता कार्यक्रमों को स्थानीय जनजातीय भाषाओं में आयोजित किया जाए ताकि लोग विषयवस्तु को बेहतर ढंग से समझ सकें।
2. समुदाय के ही विश्वसनीय व्यक्तियों या स्वयंसेवकों को प्रशिक्षित कर उन्हें कार्यक्रमों में शामिल किया जाए, जिससे लोगों में विश्वास और सहभागिता बढ़े।
3. केवल बैंकिंग जानकारी तक सीमित न रहकर बजट प्रबंधन, बचत, निवेश, बीमा एवं डिजिटल भुगतान जैसी व्यावहारिक जानकारी दी जाए।
4. स्वयं सहायता समूहों (SHG) के माध्यम से महिलाओं को वित्तीय

निर्णयों में सशक्त बनाने हेतु विशेष प्रशिक्षण और संसाधन उपलब्ध कराया जाये।

5. सरकारी योजनाओं और गैर-सरकारी संगठनों के प्रयासों में तालमेल स्थापित किया जाए ताकि संसाधनों का दोहराव न हो और लाभ अधिकतम लोगों तक पहुँचे।
6. कार्यक्रमों की समय-समय पर समीक्षा की जाए ताकि उनके प्रभाव का आकलन कर सुधारात्मक कदम उठाए जा सकें।
7. जनजातीय क्षेत्रों में बैंकिंग सुविधाएँ, एटीएम, मोबाइल नेटवर्क और इंटरनेट कनेक्टिविटी को मजबूत किया जाए ताकि डिजिटल वित्तीय सेवाओं का अधिकतम उपयोग हो सके।
8. प्रशिक्षण सामग्री और पद्धति को जनजातीय संस्कृति और परंपराओं के अनुरूप बनाया जाए ताकि कार्यक्रम अधिक स्वीकार्य और प्रभावी हो सकें।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. के परमेश्वर राव 2013, अध्ययन आंध्रप्रदेश में ग्रामीण परिवार के बीच वित्तीय समावेशन की स्थिति का अध्ययन के विशेष संदर्भ में शोध प्रबंध शोधगंगा इनफिलेबनेट ए.सी.इन.पेज-29, 353,
2. बेंद्रे अनुभव 2017 छत्तीसगढ़ के चयनित लिले में लोगों की सेवानिवृत्ति योजना निर्णय लने पर वित्तीय साक्षरता का अध्ययन विशेष संदर्भ में शोध प्रबंध शोधगंगा इनफिलेबनेट ए.सी.इन.पेज-32, 250,
3. सिंह आनंद 2017 अध्ययन भारत में वित्तीय समावेशन और किसान का अध्ययन विशेष संदर्भ में शोध प्रबंध शोधगंगा इनफिलेबनेट ए.सी.इन.पेज-32, 33,
4. कंबोज स्मृति 2017 वित्तीय साक्षरता और निवेश व्यवहार पर इसके प्रभाव का अध्ययन विशेष संदर्भ में शोध शोधगंगा इनफिलेबनेट ए.सी.इन.पेज-57, 160,
5. बालसुंदरी पी 2018 निलगिरी जिले में जनजाति परिवार का वित्तीय समावेशन और साक्षरता का अध्ययन विशेष संदर्भ में शोध प्रबंध शोधगंगा इनफिलेबनेट ए.सी.इन.पेज-05, 168,

****